

समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ५.५०

लोक कल्याण सेतु

रजि. समाचार पत्र

● प्रकाशन दिनांक : १५ अक्टूबर २०२६ ● वर्ष : ३० ● अंक : ४ (निरंतर अंक : ३५२) ● भाषा : हिन्दी ● पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)



पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

गीता जयंती
२० दिसम्बर

गीता का कोई एक श्लोक भी अपने जीवन में ले आओ तो बीते
हुए का शोक चला जायेगा, भविष्य का भय चला जायेगा,
वर्तमान की बेवकूफी और कायरता चली जायेगी । 'भगवान दूर
हैं, दुर्लभ हैं, पढ़े हैं, पढ़ाये हैं' यह नाशमझी मिट जायेगी । ईश्वरः
सर्वभूतानां...

- पूज्य संत श्री आशारामजी बापू



वेदांत की समझ देती जन्म-मरण से मुक्ति

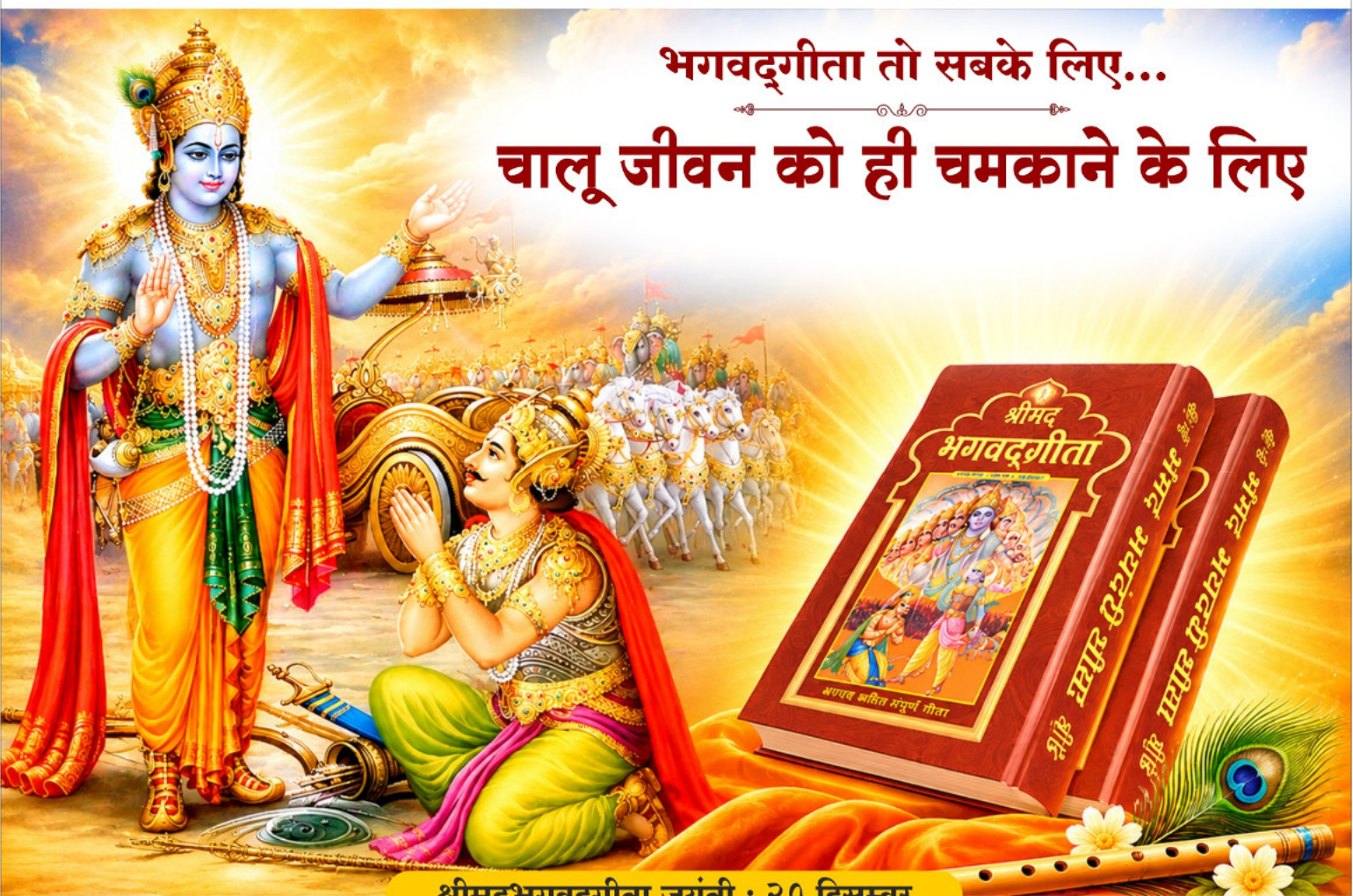
- पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

सुबह उठकर परमात्मा का स्मरण करो कि 'आज अगर तू नहीं उठाता तो मैं कैसे उठ सकता था ? चाहे नौकर आकर जगाये या अलार्म बजे किंतु जगानेवाला तू नहीं होता तो मैं कैसे जागता ? मैं तेरी कृपा से ही जागा हूँ। तेरी कृपा से आँखें देखती हैं, तेरी कृपा से कान सुनते हैं, तेरी कृपा से ही पैरों में गति आती है, तेरी कृपा से ही मन संकल्प-विकल्प करता है और तेरी कृपा से ही मति निर्णय करती है... तू-ही-तू है... प्रभु ! तेरी जय हो।'

जब भोजन करो तब भगवान को याद करो कि 'प्रभु ! तेरी कृपा से ही तो स्वाद का पता चलता है। तेरी कृपा से ही इस भोजन से रक्त बनेगा। जो बहुत जरूरी काम हैं वे तेरी कृपा से, तेरी सत्ता से ही हो रहे हैं और कम जरूरी कामों में भी तेरी सत्ता के सिवाय हमारा हाथ भी नहीं उठेगा। अर्थात् सब कार्यों में पहले तू चाहिए, सब कार्यों के मध्य में तू चाहिए और सब कार्यों के अंत में भी तू चाहिए। वाह ! तेरी लीला अपरम्पार है।' वही मनुष्य सदा सुखी रह सकता है जिसके पास ऐसी समझ है। जो मनुष्य नासमझ होकर सुखी होना चाहता है वह सदा दुःखी रहता है। नासमझ होकर मनुष्य कभी सुखी नहीं हो सकता और वेदांत की समझ पाकर कभी दुःखी नहीं हो सकता, जन्म-मरण में नहीं पड़ सकता। और वेदांत की समझ मिलती है सत्संग से।

मेटत कठिन कुअंक भाल के। सत्संग भाग्य के कुअंकों को मिटा देता है, कुदृष्टि हटा देता है। कुदृष्टि क्या है ? सच्चिदानंदस्वरूप से ओतप्रोत जगत में दुःख, आसक्ति, मुसीबतें और मौत दिख रही है यह कुदृष्टि है। आप जिस वस्तु, व्यक्ति या परिस्थिति को देखें उसमें उसके भीतर छुपे हुए परमात्मा को देखें तब आपकी दृष्टि ठीक होगी।

वह परमात्मा पूजने योग्य है, प्रेम करने योग्य है, स्मरण करने योग्य है, मिलने योग्य है। वह कैसा कारीगर है, कैसा कलाकार है ! कैसा कृपालु है, कैसा प्रेरक है, कैसा हितैषी है ! कैसा कर्म का नियामक है वह परमात्मा ! हम कुछ गलत करने जाते हैं तो हमारे हृदय की धड़कनें बढ़ा देता है। फिर भी यदि गलत कर देते हैं तो लानत देने में भी वह लापरवाही नहीं करता। यदि कुछ अच्छा करते हैं तो बुद्धि का विकास करने में भी देर नहीं करता, सामर्थ्य बढ़ाने में भी देर नहीं करता। अब उसके लिए क्या कहें ? जो कुछ भी कहेंगे वह पूरा न होगा। मत करो वर्णन हर बेअंत है।



श्रीमद्भगवद्गीता जयंती : २० दिसम्बर

२० दिसम्बर को श्रीमद्भगवद्गीता जयंती है। इसकी महत्ता के बारे में पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के सत्संग में आता है :

भगवद्गीता, ब्रह्मसूत्र और उपनिषद् ये प्रस्थानत्रयी कहलाते हैं। ब्रह्मसूत्र विद्वानों के लिए है, उपनिषदों का अमृत जिज्ञासुओं के लिए है परंतु गीता का अमृत तो मनुष्यमात्र के लिए है। उपनिषद् के मंत्र कहे जाते हैं, ब्रह्मसूत्र के सूत्र कहे जाते हैं और भगवद्गीता के श्लोक कहे जाते हैं परंतु यह भगवान पद्मनाभ के श्रीमुख से निकली है इसलिए इसका एक-एक शब्द मंत्र माना जा सकता है। इसका ज्ञान चित्त को पावन बना देता है। गीता एक ऐसा अनुपम ग्रंथ है जिसमें सबका अधिकार है। केवल हिन्दू का ही अधिकार नहीं, मानवमात्र का अधिकार है।

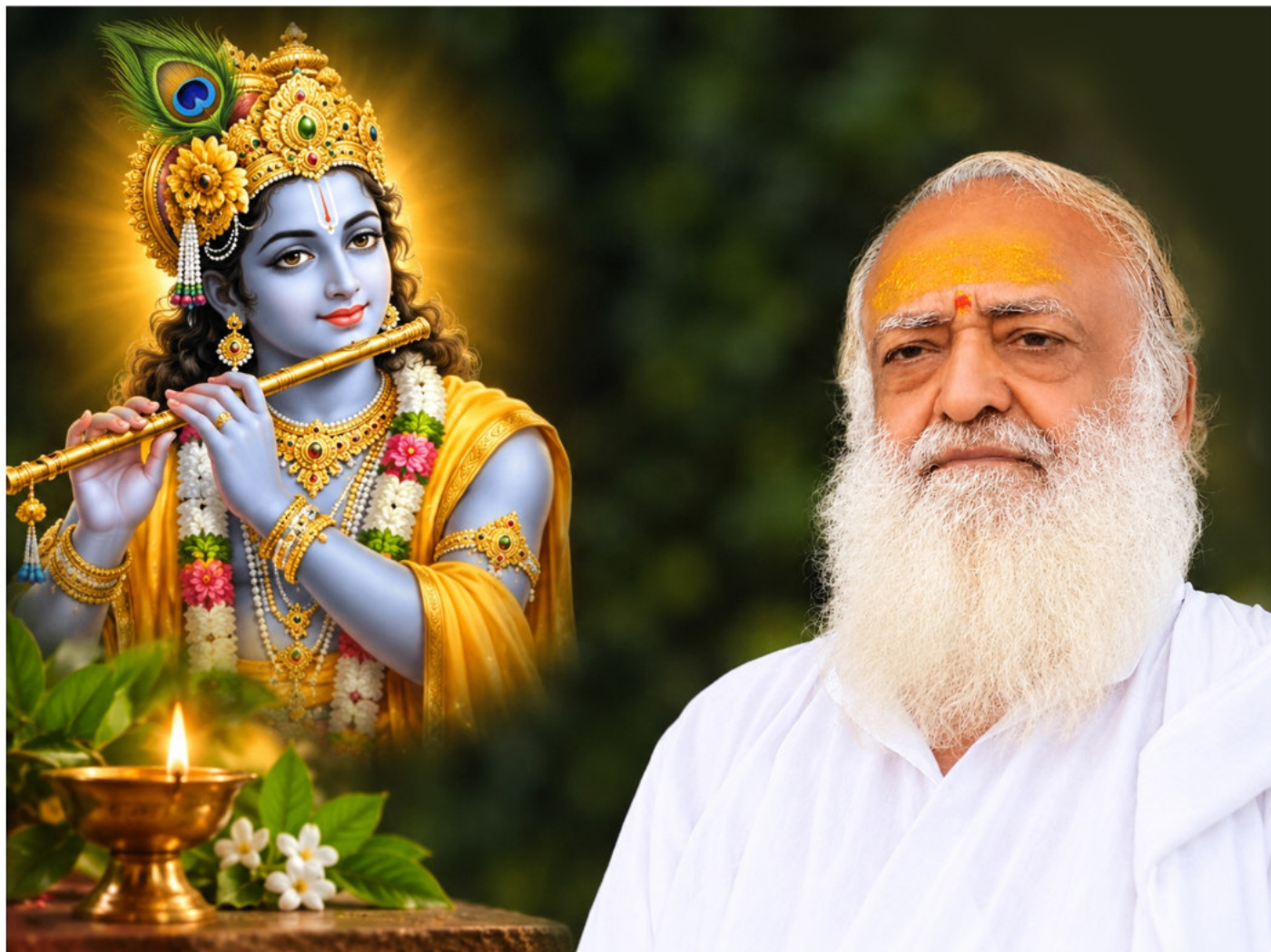
विश्वविख्यात विदुषी डॉ. एनी बेसेंट लिखती

हैं कि पश्चिम के लोग गीता को धर्मग्रंथ नहीं मानते फिर भी इससे प्रेरणा बढ़िया लेते हैं। ईश्वर सर्वत्र है और एक है – यह बात लोग नहीं जानते इसलिए भले अपने-अपने धर्म के बाड़े में रहते हैं परंतु गीता तो प्राणिमात्र का विकास चाहती है, इसमें किसी धर्म, जाति या सम्प्रदाय विशेष की निंदा-स्तुति नहीं है। मनुष्य का विकास करने की बात बता रही है गीता।

मदनमोहन मालवीयजी कहते हैं कि विश्व में इतना छोटा-सा और इतना ज्ञान भरा हुआ ग्रंथ अगर कोई है तो वह है भगवद्गीता।

मानवमात्र के लिए हैं श्रीकृष्ण के वचन

किसीके अहं को ठोकर लगे, श्रीकृष्ण के वचन ऐसे नहीं हैं। श्रीकृष्ण हँसते-खेलते ऐसा बाँट देते हैं कि अपनेवालों को तो अपने लगते हैं लेकिन जो



कैसे जानें कि ईश्वर हमसे राजी हैं या नाराज ?

- पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

तुम्हारा अंतःकरण प्रसन्न है तो सत्त्वगुण के नजदीक है। सत्त्वगुण के नजदीक है तो ईश्वर राजी है और तुम्हारा अंतःकरण इच्छाओं-वासनाओं, धारणाओं-मान्यताओं और पकड़ों में जकड़ा हुआ है तो आप सत्त्वगुण से दूर हैं, ईश्वर से दूर हैं। ईश्वर से जो दूर है उससे ईश्वर नाराज है तभी तो दूर है !

.....

सिंधी में कहावत है : रब रुसे त मत खसे । भगवान जब रुठता है, पुण्य जब कम होते हैं न, तो व्यक्ति की मति मारी जाती है। वह न करने योग्य निर्णय करता है और करने योग्य समर्पण भूलता है।

किसी भगत ने एक ब्रह्मज्ञानी संत को कहा : “महाराज ! मेरे ऊपर भगवान राजी हैं या नाराज हैं ? आप तो ज्ञानी हैं, सच बताइये। यदि नाराज हैं

तो मैं उन्हें मना लूँ और राजी हैं तो कुछ माँग लूँ।”

वे संत तो अलमस्त, तत्त्ववेत्ता थे। उन्होंने कहा कि “भगवान के पास अंतःकरण नहीं होता, वह उपाधिवाले जीव के पास ही होता है। राजी-नाराज जीव होता है; ईश्वर न राजी होता है न नाराज रहता है, ईश्वर तो अपनी महिमा से कभी च्युत होता ही नहीं। जो अपनी महिमा से च्युत



अमेरिकी युवती ने साझा किया

भारत के प्रति प्रेम का अनुभव

(गतांक से आगे)

अमेरिकी युवती सिएरा लिलियन को भारतीय आध्यात्मिकता ने इस हद तक आकृष्ट किया कि वे पिछले ५ वर्षों से अपने जीवन का अधिकांश समय भारत में रहकर योग, ध्यान आदि का लाभ लेने में बिता रही हैं। हाल ही में एक यूट्यूब चैनल पर उन्होंने एक भेंटवार्ता में अपना हृदयस्पर्शी अनुभव साझा किया। चर्चा के कुछ अंश :

प्रश्न : बहुत सारे लोग हैं जो अमेरिका में बसने का सपना देखते हैं लेकिन आप भारत में बस गयीं। तो ऐसा क्यों है ?

“मैं अमेरिका से हूँ, जो बाहर से एक अद्भुत जगह है किंतु वहाँ आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक मूल्यों की बहुत कमी है। जब मैंने भारत की जीवंत संस्कृति को जाना, देखा तब मेरी यहाँ रहने की बहुत इच्छा हुई। सनातन धर्म यहीं से आता है।

यहाँ अनेक देवी-देवताओं और महान ऋषियों, साधु-संतों की जीवंत गाथाएँ जन्मी हैं। आध्यात्मिकता की दृष्टि से भारत अद्वितीय है।”

प्रश्न : अमेरिका के जीवन-स्तर की तुलना में आप भारत में क्या अंतर महसूस कर रही हैं ?

“अमेरिका में भौतिक व्यवस्थाएँ अच्छी हैं परंतु भारत में मैं जो महसूस करती हूँ वह अलग ही है – मेरा हृदय यहाँ ज्यादा प्रसन्न है। भारत में मेरे दिल को जो चैन मिला वह अमेरिका में मिलनेवाली सुख-सुविधाओं से ज्यादा कीमती है। जितनी शांति मुझे यहाँ मिलती है वैसी शांति मैंने और कहीं कभी अनुभव नहीं की। मुझे भारत से प्यार है।”

यह केवल एक सिएरा लिलियन का अनुभव नहीं है, दुनियाभर के अनेक विदेशी भारत की आध्यात्मिक सम्पदा की ओर खिंचे चले आये हैं



बीरबल को नीचा दिखाना

अकबर को पड़ा भारी

(पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के सत्संग से)

आकाश में महल बनाने भेजे कारीगर

बीरबल रोज ध्यान करते थे, सारस्वत्य मंत्र जपते थे, उनकी बुद्धिशक्ति खुली थी। एक बार अकबर ने कहा : “हमने सुना है कि देवता लोग विमान में घूमते हैं, बिहिश्त आकाश में है तो तुम मेरे लिए आकाश में एक महल बना दो। तुम्हारे लिए कोई कठिन बात नहीं है, बुद्धिमान हो।”

बीरबल बोले : “ठीक है, आकाश में महल बनाने के लिए दो महीने का समय और कुछ रुपये चाहिए।”

“रुपये खजाने में से ले जाओ।”

बीरबल ने अपनी बेटी को कहा : “बाजार में जो भी तोते आये सबको खरीदकर उनको बोलना सिखा दे - चूना लाओ, ईंट लाओ, लोहा लाओ...”

तोते मनुष्य की भाषा बोलते ही हैं। सारे तोतों

को सिखा दिया। २ महीने पूरे हुए। निश्चित जगह पर तोतों को लाया गया। सारे पिंजरे खोल दिये तो वे पाले हुए तोते आकाश में उड़ गये, वह इलाका हरा-हरा हो गया और आकाश में ‘चें चें चें - चूना लाओ, ईंट लाओ, लोहा लाओ...’ करने लगे।

अकबर बोला : “कहाँ है महल ?”

बीरबल : “कारिगर भेज दिये हैं। अब वे चूना, ईंट, लोहा मँगा रहे हैं, आप भेजो महल बन जायेगा।”

अकबर को लगा कि ‘बीरबल मेरा भी उस्ताद है।’

पलटा अकबर का मधुर सपना

फिर दोबारा एक बार अकबर ने बीरबल से दिल्लगी की। सभा में बीरबल आये तो अकबर और उसके मंत्री जोर से हँसने लगे। बीरबल समझ गये कि ‘मेरे को नीचा दिखाना चाहते हैं।’ बीरबल भी हँसने लगे।



कम-से-कम इतना तो

भारतवासियों को करना चाहिए

संयमी जीवन बिताओ, तेजस्वी जीवन बिताओ । एक बच्चे को जन्म दिया और वह इकलौता बच्चा दुर्घटना में चला जाय तो ? या वह सामने पड़ जाय (विद्रोही हो जाय) तो ? तीन-चार बच्चों को जन्म दो । एक बच्चा सेना में काम आये देशभक्ति के लिए, एक बच्चा खेती या व्यापार करे तथा एक बच्चा समाज की सेवा करे और विश्व को शांति प्रदान करे ।

(३१ अक्टूबर १९९५ को पूज्य संत श्री आशारामजी बापू द्वारा दिया गया सत्संग)

गायों की हत्या को उद्योग का नाम दिया जाता है । गर्भपात को, भ्रूण-हत्या को जनसंख्या नियंत्रण का नाम दिया जाता है । बालक पेट में हो और उसकी हत्या की जाय तो वह भ्रूण-हत्या कहलाती है । जिस स्त्री ने भ्रूण-हत्या की हो उसके हाथ का बना भोजन भिक्षा में साधु खाये तो साधु की भक्ति नष्ट हो जाती है । स्वामी रामसुखदासजी महाराज तो उस घर की भिक्षा अपने शिष्यों को लेने से मना करते थे । गर्भपात करवानेवाली बेचारी १० जन्मों तक संतान के लिए

बिलखती रहती है । ऐसा शास्त्रों में आता है ।

जो आत्मा संसार में अवतरित होने आ रही हो, मनुष्य-जन्म लेने आ रही हो, आप उसे धकेलकर नाली में फिंकवा दें तो फिर वह हिन्दू के घर नहीं आयेगी, जो आबादी बढ़ाने में मानते हैं उनके घर जायेगी । ईसाई के घर जायेगी, मुसलमान के घर जायेगी । यहाँ हम-आप कम होते जा रहे हैं और फिर वापस वैसा ही करोगे तो और कम... आनेवाले २५-३० सालों में तो बुरी हालत में आ जाओगे । ऐसा रामसुखदासजी सार्वजनिक रूप से

स्वादिष्ट और स्वास्थ्यप्रद रोटी

कैसे बनायें ?



रोज खायी जानेवाली रोटी को और अधिक रुचिकर व गुणकारी बनाने के लिए आटे में तिल, जीरा, अजवायन तथा मेथीदाना आदि मिला सकते हैं। ये मंदाग्नि, अफरा (सरी), अपच, जोड़ों का दर्द और मोटापे में लाभकारी हैं। इनमें से एक या अधिक चीजें रोटी, चीला या पराँठा बनाने के आटे में मिला सकते हैं।

इनके गुण :

(१) तिल : यह वात, पित्त व कफ को संतुलित रखता है, भूख तथा बल-बुद्धि को बढ़ाता है। मातृदुग्ध की वृद्धि करता है, थकान, कमजोरी, जोड़ों के दर्द में लाभकारी है। काले तिल वीर्यवर्धक तथा सर्वोत्तम हैं।



मात्रा : २ कटोरी आटे में १ छोटा चम्मच तिल। काले या सफेद तिल अथवा दोनों एक साथ।

ध्यान दें : बारिश व ठंड के मौसम में अधिक उपयुक्त, ग्रीष्म और शरद ऋतु में कम मात्रा में लें।

शाम को सूर्यास्त के बाद तिल का उपयोग नहीं करना चाहिए।

(२) मेथीदाना : यह बल-वीर्यवर्धक, वात-कफशामक, भूख बढ़ानेवाला है और गैस, पेट फूलना, अपच, मधुमेह (diabetes) आदि में लाभकारी है। गर्दन एवं कमर के दर्द, संधिवात, आमवात के दर्द में यह विशेष लाभकारी है। प्रसव के बाद इसके सेवन से दूध बढ़ता है तथा शरीर व कमर के दर्द में लाभ होता है।



मात्रा : २ कटोरी आटे में चौथाई चम्मच या थोड़ा अधिक मेथी पाउडर मिलायें।

ध्यान दें : बरसात और ठंड के मौसम में उपयुक्त, ग्रीष्म व शरद ऋतु में नहीं लें।

(३) जीरा : यह भूख व रुचि वर्धक तथा पाचन व बल-वीर्य को बढ़ानेवाला है। उष्ण होने से यह कफ-वातशामक है। यह अजीर्ण, गैस, पेटदर्द,

देशी गाय के घी, आँवला व अनेक जड़ी-बूटियों से निर्मित

च्यवनप्राश / स्पेशल च्यवनप्राश केसर, मकरध्वज व चाँदी युक्त

- * स्मरणशक्ति, बल, बुद्धि, स्वास्थ्य, आयु एवं इन्द्रियों की कार्यक्षमता वर्धक
- * रोगप्रतिकारक शक्ति, नेत्रज्योति व स्फूर्ति वर्धक
- * हृदय व मस्तिष्क पोषक
- * फेफड़ों के लिए बलप्रद
- * ओज, तेज, वीर्य, कांति व सौंदर्य वर्धक
- * हड्डियों, दाँतों व बालों को बनाये मजबूत
- * क्षयरोग में तथा शुक्रधातु के व मूत्र-संबंधी विकारों में उपयोगी
- * वात-पित्तजन्य विकारों में तथा दुर्बलता में विशेष हितकर



₹ २२५
१ कि.ग्रा.



₹ ३००
१ कि.ग्रा.
₹ १६०
५०० ग्राम

जीवनीशक्ति को बढ़ानेवाला एक उत्तम रसायन ब्राह्म रसायन

इसके सेवन से शरीर की दुर्बलता और दिमाग की कमजोरी दूर होकर आयु, बल, कांति तथा स्मरणशक्ति की वृद्धि होती है। खाँसी, दमा (asthma), क्षयरोग (T.B.), कब्जियत आदि रोग दूर हो शरीर में स्थायी ताकत पैदा होती है। यह उत्तम रसायन होने के कारण जीवनीशक्ति को बढ़ानेवाला है।



₹ १२०
४० टेबलेट

रजत मालती शुद्ध रजत भस्म (चाँदी-भस्म) युक्त

- * आयु, बुद्धि, नेत्रज्योति, वीर्य, कांति व रक्त वर्धक
- * मस्तिष्क व वातवहनाड़ियों हेतु बल्य
- * रक्ताल्पता, लकवा, हिस्टीरिया, बुढ़ापे के रोग, नपुंसकता आदि में विशेष लाभदायी



₹ ६००
५०० ग्राम

स्वास्थ्य, शक्ति एवं विटामिन B₁₂ वर्धक टॉनिक संजीवनी रस

* गोझरण से निर्मित यह एक सुमधुर व सुगंधित पेय है। * इसमें पाये जानेवाले सोना और चाँदी शरीर के निर्माण, मस्तिष्क के पोषण और याददाश्त तथा बुद्धि बढ़ाने में मदद करते हैं। * इसमें निहित शिलाजीत ह्यूमिक एसिड और फुल्विक एसिड का एक उत्तम स्रोत है, जो विषनाशक, एंटी ऑक्सीडेंट और स्फूर्तिदायक गुणों के लिए जाने जाते हैं। * यह B₁₂ सहित 'B ग्रुप' के अन्य विटामिन्स एवं कैल्शियम, सेलेनियम, आयरन एवं पोटैशियम आदि खनिजों का उत्तम स्रोत है। * यह शरीर को स्वस्थ रखने एवं बल बढ़ाने में सहायक है। * मोटापा, रक्ताल्पता, यकृत-विकार, पथरी, एड्स, कैंसर, हार्ट ब्लॉकज, लकवा आदि गम्भीर रोगों में राहत एवं सुरक्षा प्रदान करने में सहायक है।



₹ १२०
७५० मि.ली.

मुनक्का व काली द्राक्ष

ये वीर्यवर्धक, तृप्तिकारक, वायु को सरलता से निकालनेवाले, पित्तशामक, हृदय के लिए हितकारक, थकान दूर करनेवाले, रक्तवर्धक तथा रक्त व मल शोधक हैं। रक्तपित्त, रक्तप्रदर आदि अनेक रोगों में ये लाभदायी हैं।



₹ ३५०
५०० ग्राम

₹ ३२०
५०० ग्राम

गौ-सेवा केंचुआ खाद

सब्जियों, अनाज, गन्ना, फलों - सभी फसलों तथा बाग-बगीचे, औषधीय व घरेलू पौधों, फूलों के लिए उपयुक्त

- * रासायनिक खाद से बिगड़ी मिट्टी का जैविक उपचार
- * दानों में चमक व अधिक उत्पादन
- * फसल की जैविक गुणवत्ता में वृद्धि
- * फसलों की रोगप्रतिरोधक क्षमता में बढ़ोतरी
- * पानी व रासायनिक खाद की बचत
- * जड़ों व पौधों का सुदृढ़ विकास



₹ ७०
५ कि.ग्रा.

५० कि.ग्रा. की बोरी में भी उपलब्ध

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा सामग्रीप्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ७३५९१९३७५२. ई-मेल : contact@ashramestore.com



घर-घर कैलेंडर 'दिव्य दर्शन' अभियान (वर्ष २०२७)

साधकगण एवं युवा सेवा संघ के
भाई इस अभियान के अंतर्गत
साधकों, मित्रों, रिश्तेदारों एवं
परिचितों के घर जाकर उन्हें दीवाल
दिनदर्शिका (वॉल कैलेंडर), पॉकेट
कैलेंडर पहुँचाने की सेवा का
लाभ लें।

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2024-2026
Issued by SSPO's-Ahmedabad City Dn.
Valid up-to 31-12-2026
WPP No. 02/24-26
(Issued by CPMG UK. valid up-to 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between
18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month



प्राप्ति : संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों पर तथा श्री योग
वेदांत सेवा समितियों एवं साधक-परिवारों के सेवा केन्द्रों पर। ऑनलाइन ऑर्डर हेतु :
www.ashramstore.com/calendar सम्पर्क : (०७९) ६१२१०७३२
(साहित्य विभाग), ६१२१०७६१ (युवा सेवा संघ मुख्यालय)

विशेष : प्रति कैलेंडर मूल्य मात्र ₹ १५। २ कैलेंडर लेने पर ₹ ५ की आकर्षक छूट के साथ आपको देने हैं मात्र ₹ २५।
₹५० या इससे ज्यादा कैलेंडर का ऑर्डर देने पर आप अपना नाम एवं फर्म, दुकान आदि का नाम-पता छपवा सकते हैं।
₹५० से ₹९९ तक छपवाने पर मूल्य ₹ १३ तथा ₹१००० या इससे अधिक छपवाने पर मूल्य ₹ १२.५० प्रति कैलेंडर रहेगा।

'तेजखिनी भव अभियान' द्वारा युवतियों में सच्चरित्रता व सुसंस्कारों का सिंचन



लोक कल्याण सेतु की सदस्यता दिलाकर पाया स्पर्शित प्रसाद



स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें :



लोक कल्याण सेतु



ऋषि प्रसाद



ऋषि दर्शन

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम प्रकाशक : राकेशसिंह आर. चंदेल मुद्रक : विवेक सिंह चौहान प्रकाशन-स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम
मार्ग, सावरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) मुद्रण-स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चर्स, कुंजा मतरालियाँ, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ सम्पादक : रणवीर सिंह चौधरी